|  |
| --- |
| 21. September 2025 |
| **25. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Am 8,4-7; Zweite Lesung: 1 Tim 2,1-8; Evangelium: Lk 16,1-13 (oder 16,10-13) |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1+4!+5  | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre, dir Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 113,1-2.4-9 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 386 | Laudate omnes gentes |
|  | oder |  |
|  | GL 822, 3+4 | Groß sein lässt meine Seele den Herrn |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Jesus Christus, der reich war,*  |
|  | *wurde aus Liebe arm.* |
|  | *Und durch seine Armut hat er uns reich gemacht.*  |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802  | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 477, 1+2! | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  | GL 459 | Selig seid ihr |
|  | GL 470 | Wenn das Brot, das wir teilen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 435, 1-3! | Herr, ich bin dein Eigentum  |
|  | GL 423, 1-3 | Wer unterm Schutz des Höchsten |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben  |
|  | GL 455 | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  |  |  |
|  |  |  |